प्रदेशी राजा की कथा का वाचन

सफलता के लिए आवश्यक है बौद्धिक विकास

– आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 4 मार्च, 2009

''जो व्यक्ति बुद्धि से काम लेता है, वह सफल होता है। हमारी दुनिया में सफलता के लिए बहुत आवश्यक है बौद्धिक विकास। बुद्धि का विकास बहुत जरूरी है बुद्धि बड़ी–बड़ी समस्या को पार कर देती है। बुद्धिहीन आदमी उलझ जाता है समस्या को सुलझा नहीं सकता।''

उक्त विचार आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने प्रदेशी राजा की कहानी के माध्यम से श्रीमद् मघवा समवरण में उपस्थित धर्म सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्य प्रवर ने कहा कि आचार्य भिक्षु में औत्पत्तिकी बुद्धि थी। औत्पत्तिकी बुद्धि का तात्पर्य है कि कोई भी प्रश्न रखो बिना सुने, बिना जाने प्रश्न का तत्काल उत्तर तैयार, औत्पत्तिक बुद्धि वह है जिसका भीतर से समाधान निकलता है बाहर से नहीं। इस प्रकार की बुद्धि के लोग बहुत कम होते हैं जिनमें औत्पत्तिकी बुद्धि हो, बुद्धिहीन आदमी कुछ कर नहीं पाते, वे असफल हो जाते हैं। सफलता के लिए बहुत आवश्यक है बौद्धिक विकास।

पूज्यप्रवर ने प्रदेशी राजा की कथा को प्रस्तुत करते हुए फरमाया – चित्त के मन में एक विकल्प उठा कि मुझे राजा प्रदेशी को बदलना चाहिए अभी जीवन अच्छा नहीं है हिंसा, क्रूरता, निर्दयता, हत्या, आतंक से पूरे राज्य में भय का वातावरण बना हुआ है। जो रक्षक है वही आज भक्षक बना हुआ है, उसे बदलना चाहिए पर कैसे बदलूं? जब व्यक्ति के मन में एक प्रश्न पैदा होता है तो उत्तर की खोज शुरू हो जाती है। उसने उत्तर की खोज शुरू की और एक समाधान मिल गया। राजधानी श्रावस्ती में गया था, वहां केशी स्वामी का संपर्क हो गया। उस समय केशी स्वामी भगवान पार्श्व के शिष्य महान आचार्य थे। वे भगवान महावीर के शासन काल में भी विद्यमान थे, उनका संपर्क हुआ और प्रवचन सुना।

राजधानी श्रावस्ती में चित्त खड़ा होकर बोला – 'भंते! मेरी एक प्रार्थना है कि आप मेरी सेविया नगरी जहां प्रदेशी राजा है, आप कृपा करें और वहां पधारें।' 'केशी स्वामी – बोले कि चित्त तुम्हारा राजा बहुत हिंसक है, क्रूर है वहां आकर मैं क्या करूंगा। मैं वहां जाता हूं जहां उपकार की संभावना होती है।'

चित्त बोला – 'भंते! जो लोग अच्छे हैं वहां तो आप जाते हैं। आपका धर्म है, आपका कर्त्तव्य है कि जो बूरे हैं उन्हें अच्छा कैसे बनाया जाये। जो अहिंसा में विश्वास करते हैं वहां आप जाते हैं किंतु जहां हिंसा है वहां कैसे कार्य हो? आप काम करें।'

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहानी में कहा कि आज भी अनेक बार इस प्रकार की बातें आती है कि जहां हिंसा है वहां अहिंसा का काम करने वालों को जाना चाहिए। कभी–कभी निमंत्रण भी मिलता है। वह निमंत्रण मिला और जाने के बाद, आग्रह किया तब केशी स्वामी ने ज्ञान से देखा, उनके पास अतिन्द्रिय ज्ञान था। ज्ञान से देखा और अनुभव किया कि वहां लाभ तो होने वाला है और शायद मेरे जाने पर प्रदेशी का सारा जीवन बदल जाएगा तो उन्होंने स्वीकृति दे दी। और कहा जब अवसर होगा, हम वहां आ जाएंगे। आखिर वहां प्रदेसी के राज्य में, राजधानी में केशी स्वामी आ गये। उद्यान में ठहरे, चित्त को पता लगा कि केशी स्वामी आ गए हैं। परंतु समस्या तो यह है कि प्रदेशी को ले जाएं कैसे? अगर प्रदेसी को कहें कि वहां संत है, साधु है आचार्य है तुम चलो तो जाएगा नहीं और कुछ कर देगा। कठिनाई पैदा कर देगा, कैसे ले जाएं।

'चित्त बड़ा बुद्धिमान था, उसने सोचा एक युक्ति कला प्रदेशी के पास आकर बोला – महाराज! टापकी धारणा है कि शरीर है वही जीव है, अलग कोई आत्मा नहीं है, न कोई पुर्नजन्म है। यह बात आप एक संत को समझा दो तो शायद वह हजारों लोगों को समझा देंगे। यह युक्ति राजा को मान्य हो गई और उन्होंने जाना स्वीकार कर लिया। एक युक्ति के द्वारा ऐसा कार्य किया। अगर यह बात समझ में आ जाए कि आत्मा अलग, शरीर अलग तो जीवन की शैली बदल सकती है।

युवाचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि मनुष्य जन्म हमारी मूल पूंजी है। जो आदमी नरक व तिर्यंच गति में जाता है इसका मतलब हुआ कि उसने मूल पूंजी को ही गंवा दिया, जो आदमी वापिस मनुष्य के रूप में पैदा होता है तो इसका मतलब है कि उसने मूल पूंजी मनुष्य जीवन की थी उसको सुरक्षित रख लिया। न नीचे गति में गया न उपर की गति में गया न विशेष धर्म किया, न विशेष पाप किया। एक वह आदमी जो मरकर देवगति में जाता है या कोई मोक्ष में चला जाता है यानी उसने मूल पूंजी को कितना बढ़ा लिया। देवगति में जाने का मतलब मनुष्य जन्म की पूंजी को बढ़ा लिया, इतना धर्म किया, साधना की कि वह देव गति में जाकर पैदा हो गया। एक दृष्टांत के द्वारा शास्त्र में यह समझाने का प्रयास किया गया है कि मानव इस बात को सोचे, समझे कि मैं क्या कर रहा हूं।

इससे पूर्व मुनि दिनेशकुमार ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

विशेष :

5 मार्च से प्रातःकालीन प्रवचन का समय प्रातः 9.45 बजे से लगभग 11 बजे तक रहेगा। उक्त सुचना युवाचार्य श्री महाश्रमण ने श्रीमद् मघवा समवसरण में प्रवचन के समय दी।

– अशोक सियोल

9982903770